ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 124-126

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

महिला सशक्तिकरण की दिशा में कार्यरत गैर-सरकारी संगठन महिला समाख्या का व्यक्तिवृत्त अध्ययन

1. विकास सिंह 2. श्रद्धा सिंह

1. शोध अध्येता, 2. एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक–शिक्षा विभाग,तिलकधारी महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0) भारत

Received- 01.12.2019, Revised- 04.12.2019, Accepted - 09.12.2019 E-mail: vikashsingh@gmail.com

सारांश : *महिला ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है, क्योंकि इसी को सृष्टि का आधार माना गया है। डा० राजेंद्र प्रसाद के शब्दों में "राष्ट्र कि प्रगति एवं सामाजिक स्वतंत्रता में महिलाओं की सुदृढ़ एवं सम्मान जनक स्थिति किसी भी राष्ट्र कि आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक राजनैतिक प्रगति व समृद्धि का सूचक है।" मानव प्रकृति के समानान्तर अपनी सत्ता की पहचान बनाने की कोशिश में है। महिलाओं कि स्थितिमें सुधार के लिए कई समाजसेवी संगठन कार्यरत है। इन्ही संगठनों में महिला समाख्या भी एक संगठन है। महिला समाख्या अपने उदेश्यों की प्राप्ति में कहाँ तक सफल है, क्या महिलाओं के जीवन में परिवर्तन लाने में सफल है, सरकारी अनुदान द्वारा संचालित यह संस्था उसके द्वारा दिए गये अनुदान को सही दिशा में पूर्णरूप से उपयोग कर रही है या नही। प्रस्तुत शोध में महिला सशक्तिकरण की दिशा में कार्यरतगैर सरकारी संगठन महिला समाख्या का व्यक्तिवृत्त अध्ययन किया गया है।*

कुंजी शब्द – सामाजिक स्वतंत्रता, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक प्रगति, समृद्धि, समान्तर, महिला समाख्या।

किसी भी देश के लिए स्त्री शिक्षा महत्वपूर्ण है, एक स्त्री को शिक्षित करना एक पुरे परिवार को शिक्षित करना हैप् भारत जैसे देश में तो स्त्री शिक्षा बहुत ही आवश्यक है। यदि किसी भवन को सुदृढ़ मजबूत और टिकाऊ बनाना है तो उसकी नीव को सबसे मजबूत बनाना होगा। जिस प्रकार नीव का महत्वपूर्ण योगदान है मजबूत मकान के निर्माण के लिए उसी प्रकार परिवार का महत्वपूर्ण योगदान है। उत्कृष्ट राष्ट्र के निर्माण के लिए एक परिवार के दो मुख्य स्तम्भ स्त्री और पुरुष है।9 वर्ष पूर्व सन 2010 में 100वाँ अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पुरे में जोर शोर से मनाया गया। परन्तु आज भी भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर जगह महिलाओं की स्थितिदयनीय एवं सोचनीय है। महिलाओं की स्थितिमें सुधार हेतु कई समाजसेवी संगठन कार्यरत है और ये सोचने को मजबूर कर रहे है कि आखिर ये कर क्या रही है। इन्ही संगठनो में महिला समाख्या एक संगठन है। व्यक्तिगत अध्ययन द्वारा इस संगठन की महिला स्थितिसुधार उपयोगिता के विषय में यह ज्ञात करना है कि यह किस तरह अपना योगदान महिलाओं की स्थिति सुधारने में कर रही है।

मानव जीवन में शिक्षा का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि बालक जन्म के समय स्त्री और पुरुष के संसर्ग से बना हुआ हांड और मांस का लोथड़ा मात्र होता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक की शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास संभव हो पाया है, क्योंकि जीवो के वंश वृक्ष पर मानव सबसे उपरी टहनी पर लगा सबसे अच्छा फल हिला, यह अधिकतम विकसित और अभी तक के जैव उद्दविकास की सबसे अच्छी कृति है। क्यों? मानव में यह प्रश्न पूछने और उसकी उत्तर देने की क्षमता है। मानव जाति का विकास स्त्री और पुरुष दोनों की ही सहायता में संभव हुआ है।

स्त्री व पुरुष एक ही प्रजाति (मनुष्य) के प्राणी है, और उनके जैविक व प्राकृतिक भिन्नता केवल प्रजनन हेतु है अन्यथा हर दृष्टी व हर कोण से सामान है। शुरु से ही कुछ इस तरह की जैविक लक्षण और जैविक इच्छाएं उत्पन्न हुई जिससे दोनों वर्गो का संपर्क एक दुसरे की जरुरत बन गए। स्त्री व पुरुष दोनों एक दुसरे के पूरक है अंतः वे एक दुसरे पर निर्भरता को बनाये हुए है,परन्तु व्यक्ति के रूप में जैसे पुरुष आत्मा निर्भर है, वैसे स्त्री भी।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण– गुडबार तथा स्केट्स कहते है। "एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है की वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजो से परिचित होते रहे,उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी क्षेत्र से सम्बंधित सूचनाओ तथा खोजो से परिचित होना आवश्यक है।"

प्रस्तुत शोध शीर्षक पर पहुचने से पूर्व निम्नलिखित शोध साहित्यों का अध्ययन किया गया।

ग्रामीण महिलाओ द्वारा पंचायती राज में हस्तक्षेप – (2000–2001)– "प्रधानो की भूमिका का एक तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर डॉ० पी०एन० शर्मा और डॉ० वाणी विनायक द्वारा एक अध्ययन किया गया। यह अध्ययन वाराणसी और नैनीताल जिले के एक–एक विकासखंड में किया गया। अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रत्यन किया गया की जिन स्थानों पर महिला समाख्या संघ की महिलाये पंचायतो में चुनकर आई है, उनके द्वारा किये गए कार्यो पर महिला समाख्या की सोच का इतना प्रभाव रहा है कि

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

वे महिलाये पंचायत गतिविधियों के प्रबंधन पंचायतीराज अधिनियम के नियमो एवं प्रक्रियाओ का अनुपालन प्रभावी ढंग से कर रही है या नहीं।

मुझे जबाब दो "चित्रकूट में महिलाओ का सामाजिक स्थान और सक्रिय हस्तक्षेप –(2000–2001) – संयुक्त राज्य अमेरिका में मिनिसोटा विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन विभाग की ऋचा नायर द्वारा किया गया अध्ययन। चित्रकूट जिले में पितृसत्ता और हिंसा के मुद्दों पर महिला कार्यकर्ताओंने सोच समझकर सामूहिक रूप से बात करने की पहल की और उसका समाज पर क्या आलोचनात्मक प्रभाव पड़ा इन बातों को जानने का प्रयास सूक्ष्म स्तरीय अध्ययन द्वारा किया गया।

किशोरियों की आवश्यकताएं (2000–2001)–डॉ० मंजू अग्रवाल (पुर्वनिदेशक राज्य परियोजनाय महिला समाख्या) किशोरियों की सीखने की अवस्थाओ को आंकने के लिए एक अध्ययन करवाया गया जिसमे किशोरियों के साथ साथ उनकी माताओ किशोरी केन्द्रों और महिला शिक्षण केन्द्रों की अध्यापिकाओ से बातचीत की गयी। इस अध्ययन से कुछ बाते प्रकाश में आई जो निम्नवत है–

– लडकियाँ असुरक्षा और अनजने भय से हमेशा ग्रस्त रहती है। घर का सहमा व्यवहार ससुराल वालो का बुरा व्यवहार बार बार पीटने और उत्पीड़न के कारण उनकी मृत्यु तक हो जाती है।

– वे कम उम्र में विवाह होने वाली परेशानियों, गर्भावस्था, बच्चो की देखभाल, पोषण और सामान्य स्वास्थ्य की जानकारी से अंजान रहती है।

उनमे आत्मसम्मान और आत्मविश्वास की कमी रहती है और वे अकेलापन में परेशान रहती है।

– समाज में व्याप्त सुरक्षा के मापदंडो के कारण वे शिक्षा से वंचित रह जाती है।

– कही भी आने जाने और पसंद की गतिविधियों करने जैसे– खेलना,घूमना आदि पर कड़े पारिवारिक व सामाजिक बंधन होते है।

महिलाओ के संवैधानिक एवं विधिक विश्लेषण अध्ययन (2014)– सौ कुसुसमलाई दाबके विधि महाविद्यालय रायपुर (छत्तीसगढ़) की प्राध्यापिका (श्रीमती) प्रीति सतपथी द्वारा किया गया अध्ययन। रायपुर जिले में महिलाओ के सभी कानूनी राय देने कानूनी दृष्टी से महिलाओ के प्रति अपराध को रोकने के प्रति बनाये गए अधिनियमों तथा अधिकारों की विवेचना प्रस्तुत अध्ययन में किया गया है।

सम्पूर्ण सवच्छ्ता अभियान में महिलाओ का योगदान (2015)– बिहार राज्य के गोविन्द शर्मा द्वारा सम्पूर्ण सवच्छ्ता अभियान में महिलाओ के योगदान पर किया गया अध्ययन। बिहार राज्य में सम्पूर्ण सवच्छ्ता अभियान को सफल बनाने में सरकारी विभागों तथा गैर सरकारी संस्थानों की भागीदारी है। बिहार शिक्षा परियोजना द्वारा गठित समाख्या समूह के सव्च्छ्ता अभियान के कार्यो का अध्ययन किया गया।

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकल कर आया की क्यों लड़कियों के साथ भेद भाव किया जाता है, सहदी का मतलब क्या है, बच्चे पैदा कैसे होते है, सजना सवरना अच्छा क्यों लगता है, वे सुन्दर क्यों क्यों देखना चाहती है,यौन संबंधो की जानकारी मागने पर बेशर्म क्यों कही जाति है, लड़की पैदा होने पर औरतो को क्यों कोसते है, आदि विषयों पर किशोरिया जानकारी लेना चाहती है। यह भी पाया गया की किसोरियो के सामाजिक परिवेश में ऐसा कोई नहीं होता जो उनके इस प्रश्नों का सही–सही उत्तर दे सके।

समस्या कथन – महिला सशक्तिकरण की दिशा में कार्यरत गैर सरकारी संगठन महिला समाख्या का व्यक्तिवृत्त अध्ययन।

प्रयुक्त पदों की संक्रियात्मक परिभाषा –

महिला सशक्तिकरण– महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक तथा कानूनी सभी स्तर पर महिलाओ में आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें सशक्त बनाना है।

गैर सरकारी संगठन (NGO)–गैर सरकारी संगठन (NGO)एक स्वैच्छिक संस्था है, जिसकों अनुदान तो भारत सरकार से प्राप्त होता है लेकिन कार्यक्रम का क्रियान्वयन, मुल्यांकन और जबाबदेही पूरी तरह स्वैच्छिक होती है।

महिला समाख्या– महिला समाख्या मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्राप्त अनुदान से एक स्वैच्छिक संस्था के रूप में चलाया जा रहा है। यद्धपि इस कार्यक्रम हेतु अनुदान भारत सरकार से प्राप्त से प्राप्त होता है। लेकिन क्रियान्वयन मुल्यांकन और जबाबदेही पूरी तरह से स्वेच्छिक संस्था की है। इस तरह से महिला समाख्या सरकारी हस्तक्षेप से पूर्णतया मुक्त राष्ट्र स्तरीय कार्यक्रम है।

व्यक्तिवृत्त अध्ययन– इकाई अध्ययन एक ऐसी प्रक्रिया है जो सामाजिक जीवन की इकाई का विभाजन व खोज करती है, चाहे वह व्यक्ति, परिवार, संस्था, सांस्कृतिक हो अथवा सार्वभौमिक समुदाय।

अध्ययन के उद्देश्य– किसी भी शोध की सर्वोत्कृष्टता शोध कार्य में निहित होती है अतः शोध कार्य के लिए उद्देश्यों का पुनर्निर्माण आवश्यक है।

समस्या को विश्लेषित करने हेतु अध्ययन के निम्न उद्देश्य निर्धारित है

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

1. महिला समाख्या संगठन की संरचना का अध्ययन करना।
2. महिला समाख्या संगठन के निर्माण के समय निर्धारित किये गये उद्देश्यों का अध्ययन करना।
3. महिला समाख्या संगठन द्वारा ली गयी शिक्षा की अवधारणा का अध्ययन करना।
4. महिला समाख्या संगठन द्वारा संचालित कार्यक्रमों का संक्षिप्त अध्ययन करना।
5. महिला समाख्या संगठन की भविष्य में क्या योजनायें है, इसके विषय में अध्ययन करना।

अध्ययन की परिसीमा – महिला समाख्या उत्तर प्रदेश को एक इकाई के रूप में अध्ययन किया गया है, इसके द्वारा संचालित शिक्षा कार्यक्रमों को अधिक गहराई से जानने की कोशिश की गयी है और इसके लिए जौनपुर महिला समाख्या केंद्र का निरीक्षण किया गया है।

जनसंख्या – प्रस्तुत अध्ययन में महिला समाख्या गैर सरकारी संगठन (NGO) उत्तर प्रदेश के 19 जनपदों को जनसंख्या के रूप में परिभाषित किया गया है।

प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्शन तकनीकि– प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश राज्य में 19 जनपद जहाँ महिला समाख्या संगठन (NGO) संचालित है, में से जौनपुर जनपद का चयन करके अध्ययन किया गया है।

उपकरण – प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों की प्राप्ति हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूचि एवं अवलोकन अनुसूचि का प्रयोग किया गया है।

अनुसंधान विधि – प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति गुणात्मक एवं वर्णनात्मक है, अतः शोध के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर वैयक्तिक अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है ।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या– राष्ट्रीय शिक्षा नीति और कार्ययोजना में बताये गये, महिलाओं की समानता के लिए शिक्षा (महिला समाख्या 1988) के नाम से शुरू किया गया, जो महिला सशक्तिकरण का माध्यम बनाया गया। महिला समाख्या मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्राप्त अनुदान से स्वैच्छिक संस्था के रूप में चलाया जा रहा है। यद्यपि इस कार्यक्रम हेतु अनुदान भारत सरकार से प्राप्त होता है, लेकिन क्रियान्वयन मूल्यांकन और जवाबदेही पूरी तरह से स्वैच्छिक है। इस तरह यह सरकारी हस्तक्षेप से पूर्णतया मुक्त राष्ट्र स्तरीय कार्यक्रम है।

महिला समाख्या महिलाओं के प्रत्येक क्षेत्र में हस्तक्षेप कर रहा है, जैसे– जेंडर असमानता, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला हिंसा तथा कानून, किशोरी जीवन, पंचायती राज, आर्थिक आत्म निर्भरता। महिला समाख्या महिलाओं के सभी क्षेत्रों का अध्ययन और कार्य बहुत अच्छी तरह से कर रही है और महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने में अपना पूर्ण सहयोग कर रही है। वैयक्तिक अध्ययन के द्वारा यह बात स्पष्ट की गयी।

शैक्षिक निहितार्थ – नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने महिलाओं की समानता में लिए, जो उद्देश्य निर्धारित किये थे, महिला समाख्या शिक्षा के माध्यम से उसे सशक्त बना रहा है। शिक्षा द्वारा ही जेंडर असमानता, स्वास्थ्य, महिला हिंसा तथा आत्म निर्भरता को भी पूर्ण कर रहा है।

1. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने महिलाओं की समानता के लिए, जो महिला समाख्या का निर्माण किया है, इससे शिक्षा को ही महिला सशक्तिकरण का माध्यम बनाया गया है।
2. महिला समाख्या के अंतगर्त जेंडर असमानता, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला हिंसा तथा कानून, किशोरी जीवन, पंचायती राज, आर्थिक आत्मनिर्भरता, प्राकृतिक संरक्षण इत्यादि जो क्षेत्र है। इसे पूरा करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।
3. महिला समाख्या का गठन ऐसे जिला में किया जा रहा है, जहाँ स्त्री साक्षरता बहुत कम है, उनकी सामाजिक आर्थिक विकास का स्तर निचा है अतः वे इन जिलो में इन सब कमियों को दूर करने में सफल हो रही है।
4. महिला समाख्या निर्माण के समय जो उद्देश्य तय किये गए थे, जैसे महिलाओ में आत्मछवि तथा आत्म सम्मान में वृद्धि करना समाज तथा अर्थव्यवस्था में योगदान देना शिक्षा में पुरुषों की बराबरी करना इन सबकी प्राप्ति कर रही है।
5. महिला समाख्या द्वारा संचालित कार्यक्रम जैसे सामूहिक शक्ति, किशोरी संघ, आत्म निर्भरता, पंचायती राज,पर्यावरण संरक्षण, शोध अध्ययन में पानी भूमिका पूरी तरह से निभा रही है, और जो महिलायें इससे वंचित है, उन्हें भी इस दिशा में ला रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. उतर प्रदेश महिला नीति (2001), महिला समाख्या उतर प्रदेश।
2. कपिल, एच० के०(1999) अनुसंधान विधियाँ,आगरा : एच० पी० भार्गव बुक हाउस।
3. गुप्ता,एस० पी० एवं गुप्ता अलका (2007) व्यवहार परक विज्ञानों में सांख्यिकीय विधियाँ इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
4. पाण्डेय, आर० एस० (1995) शिक्षा के दार्शनिक आधार, आगरा : बिनोद पुस्तक मंदिर।
5. वार्षिक रिपोर्ट (1988–1989) महिला समाख्या, उतर प्रदेश।

*****